LINEOMATIC PAPER
Page No.
Date: / /

विद्यालय संगठन के विशेषत नियम ⇒

विद्यालय का संगठन भी कुछ विशेषत नियमो के आधार पर होना चाहिए अन्यथा समाज द्वारा वे जिस उद्देश्य के लिए स्थापित किये गये है, वह निष्फल हो जायेगा। विद्यालय लघु समाज है और इसलिए जो बात समाज के लिए ठीक है। वह विद्यालय के लिए भी ठीक है। इसके अतिरिक्त विद्यालय द्वारा समाज के सदस्यो मे देश के नागरिको मे अपने कर्तव्यो के प्रति उच्च भावना का विकास करना है। यही बालको मे आरम्भ से ही इस बात की धारणा बैठा दी जाती है कि कर्तव्यपरायणता, एक व्यक्ति के लिए सबसे मूल्यवान वस्तु है। बालको मे समाजिकता की भावना का विकास कर दिया जाता है। और उसकी उन प्रवृत्तियो को जो व्यक्तिगत है तथा समाज के लिए हानिकारक है उचित रूप से शोध करके शोधन करके ठीक मार्ग की ओर उन्मुख किया जाता है।

Scanned with CamScanner

अनुशासन के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण

अनुशासन की पृष्ठभूमि पर ध्यान देने से हम देखते है कि इस समय की राजनीतिक, धार्मिक, तथा दार्शनिक विचार धारा के साथ-साथ अनुशासन का दृष्टिकोण बदलता रहता है।

प्राचीन काल मे अनुशासन की व्यवस्था ऐसी थी कि नियमो का पालन तथा देश के कानूनो को मान्यता कठोर दण्ड के भय से करायी जाती थी। यह माना जाता था कि राजा द्वारा कोई त्रुटि हो ही नही सकती थी। अतः इस अनुशासन से तात्पर्य बर्बरता पूर्ण विधियो से देश तथा समाज के नियमो को समाज के सदस्यों द्वारा मनवाना ही उन्हे अनुशासित करना था अनुशासन का यही दृष्टिकोण विद्यालयो की शिक्षा मे भी मान्य था। अनुशासन से तात्पर्य था कि विद्यार्थी कक्षा मे शान्ति पूर्वक बैठे और कक्षा मे अच्छी व्यवस्था बनाये रखे।

अनुशासन सम्बन्धी नवीन विचारधारा ⇒

हमने अनुशासन सम्बन्धी नवीन विचारधारा की संकेत किया है। क्योंकि दमनात्मक या प्रभावात्मक दृष्टिकोण बालक के विकास में बाधक होते हैं इस लिए नवीन विचारधारा में मुक्तयात्मक दृष्टिकोण को महत्व दिया जाता है। यह स्वशासन के रूप में है। और इसकी मुख्य विशेषता आत्म नियन्त्रण।

अध्यापक तथा अभिवावक बालको में छोटी आयु से ही आत्म विश्वास और कर्तव्य परायणता की भावना का विकास कर सकते है। उन्हे यह चाहिए कि वह यह चेतना करे कि बालक में स्वयं अपने कर्तव्य निभाने के प्रति उचित भावना का विकास हो। उन्हे अपने कार्य को करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हो और वे स्वतन्त्रता पूर्वक रहने का कार्य करें।

Scanned with CamScanner

अनुशासन तथा स्वतंत्रता

नवीन विचार धारा के अन्तर्गत अनुशासन में स्वतन्त्रता का समावेश होना चाहिए अनुशासन से तात्पर्य केवल अनुशासन तथा आतंक से नहीं है। अध्यापक को चाहे अनुशासन रखने के लिए बालक में सृजनात्मकता तथा सुन्दर आदतों का निर्माण करना है न कि नियन्त्रण जो अवरोधात्मक होता है।

मुलर महोदय → का कथन है

" अनुशासन सबसे नवीन तथा सम्यक रूप में अनुशासन से तात्पर्य है - बालक तथा बालिकाओं को एक जनतंत्रीय सामाजिक जीवन के लिए तैयार करना " वे कहते हैं कि अनुशासन का ध्येय व्यक्ति को ज्ञान, शक्ति, आदतों, रुचियों और आदर्शों को दे उसके स्वयं की उसके मित्र तथा उसके सम्पूर्ण समाज के लिए भलाई के लिए निर्मित करते हैं।

Scanned with CamScanner

विद्यालय में अनुशासन रखने के तीन सुझाव ⟹

अध्यापको को विद्यालय में उचित अनुशासन रखना आवश्यक है। अन्यथा विद्यालय का सारा वातावरण दूषित हो जाता है। आज कुछ उचित अनुशासन उसी को मानते हैं। जो उचित व्यवहार करते हुए विद्यालय में स्वतन्त्रता का वातावरण प्रदान करे इस सम्बन्ध में अध्यापक को बहुत सावधानी पूर्वक तथा तर्क पूर्ण ढंग से बालक की प्रकृति के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा करनी उसे यह समझ लेना कि प्रेम सहानुभूति, ईमानदारी इत्यादि शक्ति शाली अस्त्र उसके हाथ में है अनुशासन रखने में उन्हें इसी का उपयोग करना चाहिए

⟹ फ्रांसिस पारकर का कथन है- बालकों की अनुचित व्यवहारों का मुख्य कारण यह है कि उन्हें उचित व्यवहार करने की उचित परिस्थितियां ही नहीं होती अतः उचित परिस्थितियां प्रदान की जा

Scanned with CamScanner

LINEOMATIC PAPER
Page No.
Date

शेरिंग के अनुसार ⇒ विद्यालय की अनुशासन की समस्या के समाधान के लिए तीन विधियाँ है।
(1) सृजनात्मक अनुशासन
(2) प्रतिबन्धात्मक अनुशासन
(3) उपचार पूर्ण अनुशासन

(1) सृजनात्मक अनुशासन ⇒ इसके लिए विद्यालय में निम्न बातो पर ध्यान देना आवश्यक है।
(क) इस प्रकार के निर्देशो पर आधारित होना चाहिए कि - जैसे - 'यह कार्य करो' तथा इस पर नहीं कि - 'ऐसा मत करो'।
सृजनात्मक प्रक्रिया तथा आदतो पर बल देता है।
(2) विद्यालय के कार्यक्रम में बालको का उच्च स्तरीय सहयोग होना चाहिए।
(3) इसके द्वारा सामाजिक अनुभूतियो का विकास करना चाहिए जैसे बालक अधिक शोर न मचाये एक दूसरे का आदर करे।
इत्यादि

प्रतिबन्धात्मक अनुशासन →

इससे तात्पर्य है बालकों में अनुशासन हीनता की रोकथाम। इसके अनुसार एक अध्यापक यदि निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखेगा तो अनुशासन हीनता को रोकने में काफी हद तक सफल होगा।

(1) बालक का नाम याद रखना।
(2) बालक की आँखों से आँखे मिलाकर बातचीत करना।
(3) बालकों के बैठने की ठीक व्यवस्था करें।
(4) वे बालक जो ध्यान नहीं दे रहे हो उन्हें टोकें।
(5) पाठ को रोचक ढंग से पढ़ाए।
(6) बालक कार्य में रुकावट डाले तो शान्ति पूर्वक उपचार करे।
(7) सभी छात्रों के समक्ष बालक निन्दा, आलोचना ना करें।
(8) मामूली अनुशासन हीनता को तुरन्त रोक दें।
(9) पढ़ाते समय सभी छात्रों पर ध्यान दें।
(10) शिक्षा आरम्भ के समय ही दृढ़ता रखें।

Scanned with CamScanner

उपचार पूर्ण अनुशासन →

जब बालक अनुशासन हीन हो जाता है तब उसे कैसे सुधारा जाय ? इसे जानना भी अध्यापक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अध्यापक को चाहिए कि सर्व प्रथम तो वह बालक की अनुशासनहीनता के कारणों का पता लगाये।

तात्पर्य यह है कि उसके रोग का सावधानीपूर्वक निदान करे। जब निदान हो जाय तो जो उपचार बालक अपराध के सम्बन्ध में या उसके दूषित व्यवहार के पीछे छिपी हुई प्रेरणाओं के सम्बन्ध में सबसे उपयुक्त हो, उसे करे।

बालक के सुधारने में निम्न-लिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए

(1) अपराधी बालक को उस समय तक दूसरे बालको से अलग कर देना चाहिए जब तक उसके अपराध के सम्बन्ध में कोई निर्णय नहीं हो जाता।

(2) बालक को अपने कार्य के सम्बन्ध में विचार करने का अवसर दिया जाय

विद्यालय पाठ्यक्रम में अनुशासन और विषयों की समझ

Understanding Discipline and Subjects in School Curriculum

अनुशासन और विषयो का विद्यालयी पाठ्यक्रम से घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। विद्यालयी पाठ्यक्रम का स्वरूप अनुशासनिक ज्ञान द्वारा निर्धारित होता है। अनुशासन क्षेत्रों के आधार पर ही विविध विषयों का पाठ्यक्रम निर्धारित होता है। अनुशासनिक क्षेत्र के अन्तर्गत प्रमुख रूप से तीन क्षेत्रो को सम्मिलित किया गया है।

प्रथम क्षेत्र

सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित है जिसमे राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र समाजशास्त्र, लोकप्रशासन, इतिहास, भूगोल, पुरातत्व, विज्ञान विधि शास्त्र एवं जनसंख्यिकी आदि विषयो को सम्मिलित किया है।

Scanned with CamScanner

द्वितीय क्षेत्र ⇒

प्राकृतिक विज्ञान से सम्बन्धित होता है। इसमें भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, खगोल विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान एवं मानव विज्ञान आदि को सम्मिलित किया जाता है।

तीसरा क्षेत्र –

अनुशासनिक क्षेत्र भाषायी क्षेत्र से सम्बन्धित होता है जिसमें विविध भाषाओं के पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया जा सकता है। जैसे - हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू एवं विविध प्रकार की भाषाएँ। आदि इस प्रकार अनुशासनिक क्षेत्रों का सम्बन्ध विद्यालयी विषयों से पूर्णतः देखा जा सकता है।

अतः विद्यालय पाठ्यक्रम में अनुशासन और विषयों की समझ के रूप में अनुशासनिक क्षेत्रों के विद्यालयी पाठ्यक्रम पर

Scanned with CamScanner